इकाई 17 संस्कृति और विचारधाराओं का निर्माण : नस्ल, वर्ग और लिंग-भेद

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 नस्ल की विचारधारा

17.3 वर्ग की विचारधारा

17.4 लिंग-भेद की विचारधारा

17.5 सारांश

17.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

17.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप इनके बारे में जानेंगेः

- नस्ल का अर्थ और नस्ल की विचारधारा का विकास;
- वर्ग का विचार और वर्ग की विचारधारा का उदय; और
- लिंग-भेद की विचारधारा का विकास।

17.1 प्रस्तावना

अर्थशास्त्र और राजनीति के क्षेत्र में उन्नीसवीं शताब्दी के यूरोप में दो प्रमुख विकास अर्थात् औद्योगीकरण और औपनिवेशीकरण, नस्ल, वर्ग और लिंग-भेद की विचारधाराओं के विकास में बहुत महत्वपूर्ण थे। अफ्रीका, एशिया और दुनियाँ के अन्य भागों में उपनिवेशों पर अपना राजनीतिक और आर्थिक नियन्त्रण बनाए रखने के लिए यूरोपीय लोगों के लिए अपना सांस्कृतिक वर्चस्व स्थापित करना आवश्यक हो गया। नस्ल की अवधारणा को आमतौर पर अनेक सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा एक सांस्कृतिक रचना के रूप में देखा जाता है और इसका उपयोग उपनिवेशवाद की सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक व्यवस्था को न्यायोचित ठहराने के लिए किया जाता है। साम्राज्यवाद का इतिहास नस्ल की विचारधारा से अविभाज्य है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और प्रारंभिक बीसवीं शताब्दी में नस्ल और नस्लीय वर्गीकरण के इर्द-गिर्द के बौद्धिक विचार-विमर्श ने लोगों की मानसिकता को एक बड़े पैमाने पर बदल दिया। इसी प्रकार वर्ग और लिंग-भेद की विचारधारा औद्योगीकरण के बाद बदलती सामाजिक, आर्थिक आवश्यकता का परिणाम थी। औद्योगीकरण ने समाजवादी दर्शन और वर्ग समाज के उद्भव को जन्म देते हुए नई आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों का निर्माण किया। औद्योगिक अर्थव्यवस्था में अधिक महिलाओं के भाग लेने से महिलाओं के बीच एक नई चेतना का जन्म हुआ और उन्होंने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के साथ समान अधिकार के लिए आवाज उठाई। शिक्षा का अधिकार, संपत्ति का अधिकार, वोट का अधिकार आदि ने नये औद्योगिक समाज और शहरी आबादी की कल्पना-शक्ति को प्रभावित किया। लिंग-भेद की विचारधारा का मानना है कि पुरुषों और महिलाओं के बीच अन्तर का एक प्राकृतिक और जैविक आधार है। यह

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

तर्क देती है कि समाज और संस्कृति पुरुषों और महिलाओं के लिए विशिष्ट भूमिकाओं को निर्मित करते हैं। यह इकाई नस्ल, वर्ग और लिंग-भेद की विचारधाराओं के विकास के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों को स्पष्ट करेगी।

17.2 नस्ल की विचारधारा

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में अफ्रीका और एशिया के कुछ भागों के लिए पश्चिमी साम्राज्यवाद की छीना-झपटी इस विश्वास पर आधारित थी कि यूरोपीय लोगों को अफ्रीकी और एशियाई लोगों पर शासन करने का अधिकार था। औपनिवेशिक देश के भूरी और काली चमड़ी वाले भाईयों को सभ्य बनाने के लिए श्वेत लोगों पर भार की पूर्वधारणा ने यूरोपीय नस्लवादी विश्वासों को मजबूत किया। यूरोपीय नस्लवादी मान्यताओं का प्रतिबिंब औपनिवेशिक प्रशासनों द्वारा की गई नस्ल और जातियता के वर्गीकरण पर आधारित जनगणनाओं में बहुत अधिक पाया जाता है। आधिकारिक दस्तावेज बनाने और औपनिवेशिक शिक्षा के माध्यम से नस्लीय विशिष्टता के विचारों को स्थानीय विश्वास प्रणाली का हिस्सा बनाया गया और इन विचारों ने औपनिवेशिक लोगों के बीच गहरी जड़ें जमा ली। आइए अब हम यह छानबीन करने की कोशिश करें कि नस्लीय विचारधारा कैसे विकसित हुई और वंश परंपरा की सामान्य मान्यताओं का हिस्सा बन गई।

अनेक मानवविज्ञानी, दोनों जैविक और सामाजिक, और अन्य सामाजिक वैज्ञानिक यकीन करते हैं कि 'नस्ल एक सांस्कृतिक रचना है' जोसेफ आर्थर काउंट डी गोबिन्यू, एक फ्रांसीसी कुलीन, को वह व्यक्ति माना जाता है जिसके विचारों ने यूरोप में नस्लवादी विचारधारा के विकास को प्रभावित किया। वह अपने भद्र नस्ल के मूल में विश्वास करते थे और लोकतन्त्र से नफरत करते थे। उन्होंने सभ्यताओं के उत्थान और पतन की व्याख्या नस्ल के संदर्भ में करने की कोशिश की। *'एन एस्से ऑन द इनइक्वीलिटी इक्वेलिटी ऑफ द हयूमन रेसिस'* नामक एक लम्बे निबन्ध में गोबिन्यू ने तर्क दिया कि सभ्यता एक श्रेष्ठ शुद्ध नस्ल के उद्‌य से चिन्हित होती है। लेकिन समय के साथ-साथ हीन नस्लों के साथ घुलमिल जाने से अपनी जीवन शक्ति खो देती है। तीन जातियों में काली, पीली और गोरे, गोरे बुद्धिमान और रूपवान थे और गोरों में भी आर्य श्रेष्ठ थे। उन्होंने जर्मन जैसे 'आर्यो' की वकालत की जिसको उन्होंने प्राचीन भाषाओं के अध्ययन से श्रेष्ठ गुणों के साथ एक शुद्ध नस्ल के रूप में ग्रहण किया। गोबिन्यू के विचार का उपयोग श्वेत लोगों के वर्चस्व और मनुष्य की तीन अलग-अलग नस्लों : यूरोपीय, अफ्रीकी और एशियाई की धारणा के प्रसार के लिए किया गया था। श्वेत श्रेष्ठता के उनके विचार का इस्तेमाल गुलामी समर्थक अधिवक्ताओं द्वारा किया गया था। चार्ल्स डार्विन ने अपनी चिरस्मरणीय रचना, *'ऑन द ओरिजिन ऑफ स्पीसिज'* में प्राकृतिक चयन द्वारा विकास के सिद्धान्त के माध्यम से प्रजातियों की विविधता के लिए एक स्पष्टीकरण प्रदान किया। उन्होंने पर्यावरण परिवर्तन के प्रति प्रतिक्रिया के माध्यम से प्रजाति विभेदीकरण की उत्पत्ति की व्याख्या की। हालांकि, उन्होंने इसे मनुष्यों पर लागू नहीं किया और उनके सिद्धान्त का विरोध भी हुआ लेकिन बुद्धिजीवियों ने उनके सिद्धान्त का इस्तेमाल नस्लीय अन्तरों को तर्कसंगत दिखाने के लिए किया। इसने विभिन्न नस्लों और उनके गुणों को वर्गीकृत करने के लिए एक नये विज्ञान के रूप में शारीरिक मानवविज्ञान की नींव रखी। दो महत्वपूर्ण लेखकों, फ्रांसीस गेल्टन और हर्बर्ट स्पेन्सर ने नस्लीय श्रेष्ठता के विचार का विस्तार करने में योगदान दिया। फ्रांसीस गेल्टन ने अपनी पुस्तक *'हेरेडेट्रिरी जीनियस'* में दिखाया कि अंग्रेजों की मानव प्रगति का स्तर उच्चतम् था और उनकी श्रेष्ठता उनकी सभ्यता का परिणाम थी, जो श्रेष्ठ थी। उन्होंने आनुवांशिक रूप से प्राप्त विशेषताओं के विचार का प्रसार किया और तर्क दिया कि अच्छे वंश के लोगों को एक साथ प्रजनन के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उनके तर्कों ने श्वेत वर्चस्व और उपनिवेशवाद के ध्येय का समर्थन किया। हर्बर्ट स्पेन्सर डार्विन के

प्राकृतिक चयन के विचार से सहमत नहीं थे। उन्होंने जैविक विकास और सामाजिक प्रगति के विषयों को विकसित किया। यह डार्विन नहीं बल्कि स्पेन्सर था जिन्होंने *'सबसे योग्यतम की उत्तरजीविता'* वाक्यांश गढ़ा था। प्रतिस्पर्धा और प्राकृतिक चयन की धारणाओं के आधार पर सामाजिक डार्विनवाद की अवधारणा विकसित की गई थी। सामाजिक डार्विनवाद में विश्वास करने वालों का तर्क है कि समाज में ताकतवर स्वाभाविक रूप से कमजोर से बेहतर होते हैं और यह सफलता दूसरों पर उनकी श्रेष्ठता साबित करती है। समृद्ध लोग बचेंगे और गरीब लोग हारेंगे। गैर-यूरोपीय लोगों पर अपने नियन्त्रण को न्यायोचित ठहराने के लिए यूरोपीय शक्तियों द्वारा 'सामाजिक डार्विनवादी' तर्कों का इस्तेमाल किया गया था। साम्राज्यवादियों ने तर्क दिया कि एक राष्ट्र मजबूत है क्योंकि यह उत्तरजीविता के लिए संघर्ष में सबसे योग्यतम् है। नस्लवाद और सभ्यता के टकराव की वकालत करने वाले बुद्धिजीवियों के हाथों में डार्विनवाद एक साधन बन गया। यूरोपीय राज्यों का मानना था कि श्रेष्ठ नस्लों को हीन नस्लों को नियंत्रित करने का अधिकार है। इस प्रकार 'सामाजिक डार्विनवाद' ने यूरोपीय लोगों को गैर-यूरोपीय लोगों के लिए सभ्यता प्रसार लक्ष्य को तर्क संगतता प्रदान की। 'उन्नीसवीं शताब्दी से, औद्योगिक क्रांति की शुरूआत के साथ, यूरोपीय शक्तियाँ, सैन्य और राजनैतिक रूप से, एशिया और अफ्रीका के भूखंडों और लोगों पर वर्चस्व स्थापित करने में सक्षम हो पाई। यूरोपीय उपनिवेशवादियों ने विक्टोरियन युग में शासकों और शासितों के बीच प्रतिष्ठा, शक्ति और आर्थिक स्थिति के तीखे विभाजन निर्मित कर दिये। चूंकि ये विभाजन एशिया और अफ्रीका के लोगों और श्वेत लोगों के बीच रंग और अन्य शारीरिक विशेषताओं के अन्तरों के साथ मेल खाते थे, इसलिए नस्लवाद ने साम्राज्यवाद को एक शक्तिशाली वैधता प्रदान की'। (स्रोतः *'द ओरिजिन्स एंड डिमाइस ऑफ द कॉन्सेप्ट ऑफ रेस'* लेखक : चार्ल्स हिर्शमेन इन *पॉपुलेशन एंड डवलपेन्ट रिव्यू*, वाल्यूम 30, नम्बर 3 (सेप्टेम्बर, 2004), पृ. 395)। साम्राज्यवाद के अलावा, दासता एक अन्य संस्था थी जहाँ श्वेत वर्चस्व की नस्लीय विचारधारा प्रभावी रूप से उपयोग में थी। श्वेत बागान् मालिकों ने दासों पर अपना नियन्त्रण बनाए रखने और आर्थिक रूप से उनका शोषण करने के लिए नस्लीय विचारधारा का इस्तेमाल किया। इस प्रकार नस्ल की विचारधारा पश्चिमी शक्तियों के हाथों में नियन्त्रण का साधन बन गई। इसने साम्राज्यवादी शक्तियों को 'हम' और 'वे' के बीच विशिष्टता निर्मित करने में मदद की। राष्ट्रवाद के उद्‌भव ने नस्लवादी विचारों की, विशेषकर जर्मनी में और अधिक प्रोत्साहन दिया। नस्लवाद का निकृष्टतम रूप जर्मनी में नाजी शासन के तहत प्रकट हुआ था। पहली बार एशियाई और अफ्रीकी देशों में उपनिवेशवाद विरोधी आन्दोलन और लोकतांत्रिक संघर्षों ने नस्लवादी विचारधारा और इसके दोषियों के खिलाफ आवाज उठाई। (नस्लवाद की उत्पत्ति के बारे में अधिक जानकारी के लिए आप इस लेख को पढ़ सकते हैं, 'द ओरिजिन्स एन्ड डेमाइज ऑफ द कॉन्सेट ऑफ रेस' लेखक चार्ल्स हिरशमेनः इन *पॉपुलेशन एन्ड डवलपेन्ट रिव्यू*, वाल्युम 30 नम्बर 3 (सेप्टेम्बर, 2004)।

17.3 वर्ग की विचारधारा

यूरोपीय समाज में पदानुक्रमित श्रेणीबद्धता को उन्नीसवीं शताब्दी में वर्ग के उपयोग से पहले श्रेणी और पद के संदर्भ में सामाजिक श्रेणीबद्धता को परिभाषित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप में वर्ग और वर्ग-संबंधों को आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक द्वारा आकार दिया गया। यूरोप में कई तरह के सामाजिक वर्ग मौजूद थे और समय के साथ वर्गों के बीच संबंध काफी बदल गये। वर्ग की अवधारणा की उत्पत्ति सांमतवादी सामाजिक व्यवस्था में थी जो एक काफी संगठित पदानुक्रम था। सामंती समाज में सम्राट या संप्रभु पदानुक्रम के शीर्ष पर आसीन था और उसके बाद अभिजात्य, कुलीनजन, वकील, व्यापारी, पादरी, स्वतंत्र भूमिधारक किसान, काश्तकार किसान तथा

कृषिदास आते थे। यह भूमि का स्वामित्व था जो दौलत की स्त्रोत थी और सामाजिक पदानुक्रम की निर्धारक भी। यह धारणा थी कि सामाजिक पदानुक्रम ईश्वरीय व्यवस्था द्वारा निर्धारित किया गया था इसलिए इसके सम्मान और बनाए रखने की आवश्यकता थी। हालाँकि, पहले ब्रिटेन और फिर अन्य यूरोपीय देशों में औद्योगिकरण के आगमन से सामाजिक पदानुक्रम से धारणा बदल गई। अब जन्म के स्थान पर दौलत, शिक्षा और व्यवसाय समाज में वर्ग पदानुक्रम के निर्धारक बन गये। सामाजिक पदानुक्रम से धार्मिक औचित्य ने अपनी प्रासंगिकता खो दी और व्यक्तिगत प्राकृतिक अधिकारों के आधार पर सामाजिक समानता के नये विचार आगे आए। आरोही और अवरोही दोनों प्रकार की सामाजिक गतिशीलता काफी सामान्य हो गई। आइए अब हम देखते हैं कि सामाजिक चिंतकों ने इस सामाजिक रूपान्तरण और वर्ग के महत्व को कैसे स्पष्ट किया।

कार्ल मार्क्स और वेबर दो महान विचारक हैं जिन्होंने यूरोप में नये विकसित औद्योगिक समाज में सामाजिक वर्ग का विश्लेषण किया। कार्ल मार्क्स ने दो महान वर्गों के बारे में बात की - उत्पादन के साधनों के स्वामी, पूँजीपति और काम करने की क्षमता रखने वाले मजदूर। क्योंकि पूँजीपतियों या मजदूर मालिकों ने मजदूरी का भुगतान किया, इसलिए मालिकों का श्रमिकों पर नियन्त्रण था। मालिकों पर श्रमिकों की निर्भरता उनके शोषण का स्त्रोत और वर्ग संघर्ष का आधार थी। मालिक और श्रमिक अपनी स्थिति और अधिकारों के बारे में चेतन थे। जो मार्क्स के अनुसार वर्ग चेतना है। हालाँकि उन्होंने मालिकों और श्रमिकों के बारे में बात की थी लेकिन उन्हें तीसरी श्रेणी, छोटे पूँजीपति वर्ग (पेटी बुर्जूआ) के अस्तित्व के बारे में पता था। मार्क्स ने जोर दिया कि दौलत और कार्य का वितरण वर्ग संरचना का आधार है। मार्क्स के अनुसार, 'मनुष्य की चेतना उनके अस्तित्व को निर्धारित नहीं करती, बल्कि इसके विपरीत, उनका सामाजिक अस्तित्व है जो उनकी चेतना को निर्धारित करता है।' (कार्लमार्क्स, *ए क्रिटिक ऑफ पोलिटिकल इकॉनोमी*) उनका विचार था कि सामाजिक स्तरीकरण या वर्ग-विभेद पूँजीवाद की आर्थिक प्रणाली के परिणाम थे जिसने विभिन्न वर्गों को विरोधात्मक संबंधों में रख दिया। उन्होंने वर्ग-विभाजन को सामाजिक टकराव का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत पाया। मार्क्स ने कम्युनिस्ट घोषणपत्र में लिखा, 'अब तक के सभी मौजूदा समाजों का इतिहास वर्ग-संघर्षों का इतिहास है। स्वतंत्र मनुष्य और दास, पेट्रिशियन और प्लेबियन, (कुलीन जन और सर्वसाधारण), भू-स्वामी और कृषिदास श्रेणी स्वामी और कारिन्दें, एक शब्द में उत्पीड़क और उत्पीड़ित, एक दूसरे के सतत् विरोध में खड़े थे और एक अविरल, अभी अदृश्य, अभी खुली लड़ाई में संलग्न थे, एक ऐसी लड़ाई जो हर बार, या तो बड़े पैमाने पर समाज के क्रांतिकारी पुनर्गठन में, या विरोधी वर्गों के साझा विनाश में समाप्त होती है'। मेक्स वेबर मार्क्स के वर्ग विश्लेषण से प्रभावित थे लेकिन वेबर के मत में सामाजिक स्थिति का भी सामाजिक विभिन्नता में महत्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने समाज में एक व्यक्ति की स्थिति का निर्धारण करने में शक्ति और स्थिति (हैसियतों) के विचारों को पेश किया। मार्क्स के दो सामाजिक वर्गों के वर्गीकरण धनी और निर्धन के बजाए वैबर ने तर्क दिया कि मध्यम वर्ग का उदय व्यक्ति के बाजार की स्थिति का परिणाम था। उनकी राय में सामाजिक स्तरीकरण आवश्यक नहीं कि वर्ग चेतना और अन्नतः एक क्रांति को जन्म दे।

यद्यपि वर्ग को परिभाषित करने में मतभेद हैं, परन्तु सामाजिक वैज्ञानिकों के बीच आम सहमति है कि तीन प्रमुख सामाजिक वर्ग हैं - उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और श्रमिक वर्ग। ऐतिहासिक रूप से सामन्ती समाज में उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व उन आभिजात्य वर्गों द्वारा किया जाता था जिनके पास भूमि थी। पूँजीवाद द्वारा चिन्हित औद्योगिक समाज में उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व उन लोगों द्वारा किया जाता है जिनके पास दौलत होती है और जो बड़ी भारी मात्रा में संपत्ति विरासत में प्राप्त करते हैं। उनकी विशिष्ट जीवन शैली होती है और आर्थिक और राजनैतिक निर्णय लेने की पर्याप्त शक्ति। मध्यम वर्ग में वे लोग शामिल

हैं जो तकनीकी और व्यवसायिक व्यवसाय में काम करते हैं, सफेद पोश नौकरी वाले, छोटे व्यवसायी आदि। मध्यम वर्ग के उद्‌य को स्पष्ट करते हुए ई. जे. हॉब्सबॉम ने लिखा, 'प्रांतों के नये लोग एक दुर्जेय सेना थे इसलिए भी कि वे उच्च और निम्न श्रेणियों के बीच अन्तर को पाटने वाली एक मध्मय श्रेणी की बजाए अधिकाधिक स्वयं के एक वर्ग होने को लेकर चेतन थे। (वास्तविक पारिभाषिक शब्द 'मध्यम वर्ग' पहली बार 1812 के आसपास दिखाई पड़ता है) ... इसके अलावा, वे केवल एक वर्ग नहीं थे, बल्कि लड़ाई की एक वर्ग सेना थे, जो प्रथम बार ''मेहनतकश गरीब'' के संयोजन में (जिन्हें उन्होंने माना, उनके नेतृत्व का अनुसरण करना चाहिए) कुलीन समाज के खिलाफ, और बाद में सर्वहारा और जमींदार दोनों के खिलाफ, सबसे उल्लेखनीय रूप से उस वर्ग-सचेत निकाय, द एंटी कॉर्न लॉ लीग में संगठित हुए। वे स्वयं निर्मित व्यक्ति थे, या कम से कम असाधारण मूल के लोग थे जो जन्म, परिवार या औपचारिक उच्च शिक्षा के आभारी नहीं थे' (ई. जे. हॉब्सबॉम, द *ऐज ऑफ रेवोलुशन; 1789-1848*, पृष्ठ 227-28)।

औद्योगिक समाज में शारीरिक श्रमिकों, कुशल अर्धकुशल और अकुशल कामगार से मिलकर बना श्रमिक वर्ग, जनसंख्या के बहुसंख्यक का प्रतिनिधितव करता है और वे समाज की मुख्य प्रेरक शक्ति हैं। श्रमिक वर्ग के पास आमतौर पर संपत्ति नहीं थी और वह मजदूरी पर निर्भर था। श्रमिकों का जीवन अन्यायपूर्ण और अमानवीय था। वे सभी संपदा के स्त्रोत थे लेकिन वे अपने मालिकों की दया पर जीते थे। उन्होंने अमीरों के कारखानों में काम करके उन्हें और अमीर बना दिया लेकिन मजदूर गरीब और बेसहारा बने रहे। अमीरों द्वारा अपने शोषण के प्रति मजदूर चुप नहीं रहे, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुए और अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए संगठित हुए। 1830 के दशक तक सर्वहारा चेतना ब्रिटेन और अन्य यूरोपीय देशों में बहुत अधिक गोचर थी और उन्होंने अपने अधिकारों के लिए लोकतान्त्रिक आन्दोलन संगठित किया। ब्रिटेन में 1829 और 1834 के बीच श्रमिकों ने खुद को उच्च मजदूरी के लिए लामबंद किया और बड़े पैमाने पर जनप्रतिरोध और हड़ताल का सहारा लिया। यह उच्च वर्ग और पूँजीपति वर्ग के खिलाफ मजदूर वर्ग की लामबंदी की शुरूआत थी और यह मेहनतकश गरीबों की राजनैतिक चेतना के विकास में प्रतिबिंबित हुआ।

इस प्रकार हम पाते हैं कि सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण और यूरोप में औद्योगिक समाज के विकास ने नई सामाजिक व्यवस्था और नये वर्गों का निर्माण किया। समाज अधिक लचीला हो गया और वर्गों के भीतर गतिशीलता के लिए अवसर खुले जो सामंतवाद के तहत संभव नहीं था। सामंती समाज में जन्म आपकी सामाजिक स्थिति को निर्धारित करता था लेकिन औद्योगिक पूँजीवाद के तहत शिक्षा, रोजगार और धन के माध्यम से समाज के निचले पायदान वालों के लिए ऊपर उठने की संभावनाओं को खोल दिया (वर्गों के विकास पर और अधिक चर्चा के लिए आपने बी.एच.आई.सी.-111 पाठ्‌यक्रम में इकाई 12 भी पढ़ी है)।

बोध प्रश्न 1

1) नस्लीय विचारधारा के विकास और इसके निहितार्थ के बारे में लगभग दस वाक्यों में लिखिए।

....

....

....

....

2) वर्ग की अवधारणा कैसे विकसित हुई? वर्ग पर मार्क्स के विचारों पर एक टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

17.4 लिंग-भेद की विचारधारा

लिंगभेद की विचारधारा समाज में पुरुषों और महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिकाओं के विचार पर आधारित है। लिंग और लिंग-भेद के बीच का अन्तर लिंगभेद की विचारधारा के केन्द्र में है। यह केवल लिंगभेद का सवाल नहीं है बल्कि समाजों की जटिलताओं को समझने के लिए लिंग-भेद की विचारधारा का सांस्कृतिक निर्माण भी बहुत महत्वपूर्ण है। अनेक विचारधाराओं द्वारा यह माना जाता है कि पुरुषों और महिलाओं से जुड़ी सामाजिक या लिंग की भूमिकाएँ समाज में महिलाओं को वशीभूत करने के लिए पुरुषों द्वारा विशुद्ध रूप से सांस्कृतिक निर्माण है। नारीवाद शब्द के आगमन से पहले महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष शुरू हुआ और उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त से यूरोप में नारीवादी आन्दोलन शुरू हुआ। नारीवादियों और महिला आन्दोलनों ने समाज में व्याप्त सभी पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रहों का मुकाबला किया। आइए अब हम महिलाओं को वशीभूत करने के और उन्हें कार्यबल में समान से कम आँकने वाले औचित्य को चुनौती देने वाले विचारों के विकास पर चर्चा करते हैं।

बुद्धिजीवी और कार्यकर्त्ता, यहाँ तक कि जिसमें पुरुष भी शामिल थे, महिलाओं के अधिकारों के बारे में मुखर हो गये। मेरी वॉल्सटोनक्राफ्ट ने एक आलेख, द *विंडीकेशन ऑफ द राइट्स ऑफ वूमेन* ने बताया कि कैसे अठारहवीं शताब्दी के अन्त में महिलायें उत्पीड़ित थी और समाज में उचित स्थान से वंचित किया हुआ था। उन्होंने माना कि लड़कियों की शिक्षा की उपेक्षा व्यस्क महिलाओं के रूप में उनकी पीड़ा का मुख्य कारण थी और उनके पास उनके मौलिक अधिकारों के हनन् की रक्षा करने का कोई साधन नहीं था। उन्होंने महिलाओं को असहाय दिखाने वाली मौजूदा अवधारणाओं की निन्दा की। वह महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए तर्कशील और तार्किकता को प्रोत्साहन देना चाहती थी।

विलियम थॉमसन को उन्नीसवीं शताब्दी में महिलाओं के अधिकारों के लिए प्रथम पुरुष अधिवक्ता माना जाता है। उन्होंने *'अपील ऑफ वन हॉफ द ह्यूमन रेसः विमेन अगेन्सट द प्रीटेंशन्स ऑफ द अदर हाफ, मैन टू रिटेन देम इन पोलिटिकल एन्ड देन्स इन सिविल एन्ड डोमेस्टिक स्लेवरी'* लिखी। श्रीमती अन्ना व्हीलर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उन्होंने ने लिखा, 'निम्नलिखित पन्नों में आप इसकी चर्चा पाएंगी, जिसकी आपने अक्सर बातचीत में चर्चा की है - नैतिकता और विधान के उस उच्च और महत्वपूर्ण विषय की एक शाखा, महिलाओं की स्थिति, मानव जाति का आधा भाग, जिसे सभ्य समाज कहा जाता है। हालाँकि यह मेरे लिए नहीं है कि ''दिव्य प्रेरणा दी गई'', जो आपके पहले से ना सोचे गये असंयत वाक्यों को शीलता और वाकपटुता के साथ तर्क की शान्त धारा के रूप में आकार दे सकता है; हालाँकि मैं आप जैसी स्थिति में नहीं रहा हूँ और यौन कानूनों की असमानताओं से पीड़ित नहीं हूँ, मैं आपके जैसे संवेदनशीलता नहीं दिखा सकता। आपके उदातं आक्रोश और लड़कनपन और पाखंड की अवमानना के साथ जिसके साथ पुरुष अपने जीवन पर्यन्त मन और प्रसन्नता नाशक उत्पीड़नों पर पर्दा डालने की कोशिश करते

हैं। जो हमेशा मूर्खतापूर्ण उत्पीड़कों के लिए भी हितकारिता के मिजाज वाला है; यद्यपि मैं आपकी तरह महसूस नहीं करता इसके लिए एक पुरुष के रूप में पैदा होने के अवसर को धन्यवाद – जो इर्द-गिर्द नैतिक विराने में अकेला दिखने वाला : यद्यपि मैं इस प्रश्न पर विचार करने में व्यक्तिगत रुचि से मुक्त हूँ; लेकिन मैं सरल तथ्यों और मामले के तर्क से अप्राप्य नहीं हो सकता हूँ। हालाँकि इस विषय पर सोचने के लिए मैं आदी रहा हूँ, लेकिन मैं उन साहसी और अधिक व्यापक विचारों के लिए आपका ऋणी हूँ जिन्हें शायद केवल एक प्रिय विषय पर मन की एकाग्रता द्वारा प्राप्त किया जा सकता है भले ही विषय भयानक हो। अपने विचारों को आपके विचारों से पृथक करना मेरे लिए असंभव था क्योंकि वे मेरे विचारों में इतने सम्मिश्रत हो चुके हैः जनता के लिए यह उदासीन है; लेकिन मेरे लिए कितना प्रशंसापूर्ण, क्या मैं उम्मीद कर सकता हूँ कि मेरे किसी भी सुझाव ने आपके मस्तिष्क में इतना समाहित कर लिया है। (वन्दना जोशी में उद्धत, फरोम ए बोनसाई टू ए बनियान ट्रीः द ट्रेजक्ररी ऑफ यूरोपीयन फेमिनिज्म, इन वन्दना जोशी (एडिटिड), *सोशल मूवमेन्टस एंड कल्चरल करंटस् : 1789-1945*, पृ. सं. 235-36)।

महिलाओं के राजनैतिक अधिकारों की वकालत करते हुए विलियम थॉमसन ने '*अपील ऑफ वन हाफ ऑफ द हयूमन रेसः विमेन अगेन्सट द प्रिटेन्शन्स ऑफ द अदर हाफ, मैन टू रिटेन देम इन पोलिटिकल, एन्ड देन्स इन सिविल एंड डोमेस्टिक स्लेवरी* में लिखा,

'इतने हजारों वर्षों के अपरिवर्तित निरंकुशता ने पूरी तरह आपको तुच्छ नहीं बनाया है, आपके भीतर प्रकृति की भावनाओं, प्रसन्नता के प्रेम और समान न्याय को बुझा नहीं पाया है। कानून, अंधविश्वास और सदियों की अज्ञानता की ढोंगी नैतिकताएँ पूरी तरह सफल नहीं हुई हैं ... समान अधिकार प्राप्त करने के लिए, पुरुषों के साथ समान खुशी के आधार पर, आपका उनके द्वारा आदर किया जाना चाहिए, न कि अपनी स्वार्थी भूख बुझाने के लिए दुर्लभ माँस की तरह आपकी अभिलाषा होनी चाहिए। उनके द्वारा आदर पाने के लिए, आपको अपनी दृष्टि में सम्मानजनक होना चाहिए; आपको अपनी शक्ति दिखानी चाहिए, आपको अधिक उपयोगी होना चाहिए। आपको स्वयं को पुरुषों के साथ सामान्य प्रसन्नता में योगदान करने की अपनी क्षमताओं को समान मानना चाहिए, और इसलिए प्रत्येक आनंद में समान रूप से उनके समान हकदार होना चाहिए। आपको इन क्षमताओं का उपयोग करना चाहिए और जब तक समान कर्त्तव्यों से ज्यादा आप पर ना लादे जाएं तब तक आपत्ति जतानी चाहिए, जब तक आप पर समान सजा से ज्यादा ना थोपी जाए, जब तक कि समान आनन्द और सुख चाहने के समान साधन आपको पुरुषों के समान उनकी अनुभति ना दी जाये' (*स्रोतः वॉमहिस्ट. एलेक्जेंडरस्ट्रीट.कॉम*)।

जॉन स्टुअर्ट मिल ने अपने निबन्ध '*द सबजेक्शन ऑफ विमेन*, 1879 में प्रकाशित, में पुरुषों और महिलाओं के बीच कानूनी और सामाजिक समानता के पक्ष में तर्क दिया, उन्होंने लिखा, 'एक लिंग द्वारा दूसरे की कानूनी अधीनता अपने आप में गलत है और अब यह मानव सुधार में एक प्रमुख बाधा है' जब मिल ने इस निबन्ध को लिखा तो स्त्रियों को पति से अलग और अपने आदर्श स्थान घर से दूर सार्वजनिक स्थान में स्त्रियों का एक पृथक कानूनी अस्तित्व नहीं था। उन्होंने जोर देकर कहा कि जब तक समाज पुरुषों और महिलाओं के साथ समान व्यवहार नहीं करता है, महिलाओं की प्राकृतिक क्षमताओं को समझना मुश्किल है। मिल ने मौजूदा सामाजिक संरचनाओं को बदलने के लिए सुधार का सुझाव दिया और महिलाओं को उनके जन्म के कारण दूसरी श्रेणी के नागरिकों के रूप में प्रस्तुत करने के खिलाफ अपनी चिंता व्यक्त की। यह तर्क दिया जाता है कि समाज में महिलाओं को वशीभूत करने के लिए शिक्षा जिम्मेदार है। समाज और शिक्षा मुख्य रूप से पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानता पैदा करने में जिम्मेदार हैं। मिल ने लिखा,

'जब से महिलाएँ अपनी भावनाओं को अपने लेखन (प्रचार की एकमात्र विधा जिसकी समाज उन्हें अनुभति देता है), उनमें से एक बढ़ती संख्या ने उसकी वर्तमान सामाजिक स्थिति के

खिलाफ विरोध दर्ज किया हैः और हाल ही में उनमें से हजारों ने सार्वजनिक जीवन में विदित प्रसिद्ध महिलाओं के नेतृत्व में अपने संसदीय मताधिकार में प्रवेश के लिए संसद में याचिका दायर की है। महिलाओं के ठोस रूप से शिक्षित होने के दावे पुरुषों की तरह ज्ञान की समान शाखाओं में शिक्षित होने के दावे, को तीव्रता के साथ सफलता की एक बड़ी संभावना के साथ आग्रह किया जाता है जबकि अब तक उनके लिए बंद व्यवसायों में उनके प्रवेश की माँग हर वर्ष अति आवश्यक हो रही है। हालाँकि जैसा कि संयुक्त राज्य अमेरिका में है लेकिन इस देश में नहीं है, महिलाओं के अधिकारों के लिए आन्दोलन करने के लिए आवधिक सम्मेलन और संगठित पार्टी है, राजनैतिक मताधिकार प्राप्त करने के सीमित ध्येय के साथ महिलाओं द्वारा संगठित और प्रबंधित कई सक्रिय संस्थाएँ हैं।' (जे. एस. मिल, *द सब्जेक्शन ऑफ विमेन*)।

मिल की रचना का पूरे यूरोप और अन्य देशों में महिलाओं के बीच महत्वपूर्ण प्रभाव था। बुद्धिजीवियों द्वारा उठाए गए मुद्दे मुख्य रूप से महिलाओं के शिक्षा के अधिकार, संपत्ति, राजनैतिक और आर्थिक अधिकारों और कानूनी सुधारों के बारे में थे जो विवाह कानूनों को बदलकर महिलाओं को समान अधिकार प्रदान करते थे। हम यहाँ नारीवादी आन्दोलन की चर्चा नहीं करेंगे क्योंकि हमने बीएचआईसी-111 में जनसंख्या, परिवार और लिंग-भेद पर एक पूर्व इकाई में लिंग-भेद के बारे में चर्चा की है। यहाँ पर यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप महिलाओं में समान अधिकारों के लिए चेतना बढ रही थी जिनसे उन्हें वंचित रखा गया था। मताधिकार के लिए महिलाओं का आन्दोलन पहली बार ब्रिटेन में उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शुरू हुआ और उसके बाद ये आन्दोलन और अधिक उग्र बन गया और दूसरे देशों में फैल गया। पितृसत्ता के उन्मूलन की माँग बढ़ती जा रही थी और परिवार, चर्च, अकादमी और महिला अधीनता के लिए जिम्मेदार अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं पर महिला कार्यकर्त्ता हमले कर रही थी। पुरुष और महिलाओं के बीच विभेद किसी भी प्राकृतिक विभेद की बजाए सामजिक, सांस्कृतिक निर्माण के रूप में अधिक देखा जाने लगा। महिलाओं की मुक्ति के लिए की गई पहल से शिक्षा, अर्थव्यवस्था, राजनीति और जीवन के अन्य क्षेत्रों में विशेष रूप से मध्यम वर्ग की महिलाओं में स्पष्ट रूप से बदलाव आया। ई. जे. हॉब्सबॉम ने लिखा, 'यह पहली नजर में बेतुका लग सकता है कि मानव जाति के आधे भाग के इतिहास पर विचार करने के लिए पश्चिमी मध्यम वर्गों के संदर्भ में विकसित और विकासशील पूँजीवादी देशों के भीतर एक अपेक्षाकृत छोटा समूह था। फिर भी यह वैध है, जहाँ तक इतिहासकार महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन और रूपान्तरण पर ध्यान केन्द्रित करते हैं क्योंकि इनमें सबसे अधिक मर्मभेदी, ''महिलाओं की मुक्ति'' को इस अवधि में मार्ग दर्शाने का काम अभी भी लगभग पूरी तरह से मध्यम वर्ग और एक अलग रूप में समाज के सांख्यिकीय रूप से कम महत्वपूर्ण ऊपरी स्तर तक सीमित था। इस समय यह बहुत मामूली था, भले ही इस अवधि में महिलाओं की एक छोटी लेकिन अभूतपूर्व संख्या थी, जो सक्रिय थी और वास्तव में असाधारण रूप से प्रतिष्ठित, उन क्षेत्रों में जो पहले पूरी तरह पुरुषों तक सीमित थेः *रोजा लुगजबर्ग*, मैडम क्यूरी, बिट्राइस वेब जैसी हस्तियाँ' को पैदा किया (ई.जे. हॉब्स बॉम, *द ऐज ऑफ एम्पायर 1875-1840*, पृष्ठ 192)।

बोध प्रश्न 2

1. लिंग-भेद की विचारधारा को परिभाषित कीजिए।

....

....

....

....

....

2. महिला-सशक्तीकरण के बारे में विलियम थॉमसन और जॉन स्टुअर्ट मिल के विचारों के बारे में संक्षेप में लिखिए।

....

....

....

....

....

17.5 सारांश

हमने इस इकाई में चर्चा की है कि उन्नीसवीं शताब्दी के यूरोप में राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक विकासों का सांस्कृतिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा। अफ्रीका और एशिया में औपनिवेशिक साम्राज्य के विस्तार ने साम्राज्यवादी शक्तियों को सांस्कृतिक वर्चस्व की विचारधारा विकसित करके औपनिवेशिक लोगों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना अनिवार्य बना दिया। नस्लीय विभेद और श्वेत वर्चस्व की विचारधारा औपनिवेशिक सांस्कृतिक निर्माण का परिणाम थी। हमने स्पष्ट किया कि कैसे जोसेफ आर्थर काउंट डी गोबिन्यू, चार्ल्स डार्विन और हर्बर्ट स्पेन्सर ने अपने शोध के माध्यम से नस्ल की विचारधारा को स्थापित करने में योगदान दिया, जिसने बाद में नस्लवाद को जन्म दिया और जिसकी सबसे निकृष्टतम अभिव्यक्ति जर्मनी में नाजी शासन के तहत् देखी गई। सामन्तवाद से औद्योगिक पूँजीवाद में रूपांतरण ने एक नये वर्ग गठन की अवधारणा को जन्म दिया। भूमि अब वर्ग का एकमात्र निर्धारक नहीं रह गई और इसके स्थान पर समाज में कुछ चुनिंदा लोगों के स्वामित्व वाली पूँजी ने नये वर्ग विभेदीकरण को पैदा किया। मार्क्स और वेबर के लेखन इस नये वर्ग गठन और इसके अन्तर्विरोध के उद्भव का प्रतिनिधित्व करते हैं। विशेष रूप से मध्यम वर्ग और श्रमिक वर्ग का उदय और वर्ग हित के संरक्षण के लिए वर्ग आधार पर लामबंदी उन्नीसवीं शताब्दी में साफ दिखाई पड़ती है। महिलाओं को समानता, शिक्षा, संपत्ति और मतदान के अधिकार से वंचित रखा गया। हम पाते हैं कि अपने लेखन के माध्यम से समाज के उच्च स्तर की महिलाओं ने असमान व्यवहार के बारे में चिंता जताई और कुछ पुरुष बुद्धिजीवियों ने भी महिला अधिकारों के लिए आवाज उठाई। औद्योगीकरण से बड़ी संख्या में महिलाओं को कारखानों में काम करने के लिए घर से बाहर लाया गया और धीरे-धीरे अधिक महिलाओं ने पुरुषों के साथ समान दर्जे की माँग के लिए पितृसत्ता के प्रतिबन्धों को तोड़ दिया। महिलाओं के स्वरों ने सत्ताधारियों को उनके समानता के अधिकार को स्वीकृत करने के लिए मजबूर किया और लिंग-भेद की विचारधारा ने यूरोप में नारीवाद के उदय को प्रभावित किया।

17.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 17.2 देखें।

2) भाग 17.3 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 17.3 देखें।

2) भाग 17.3 देखें।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

Hobsbawm, E. J., *The Age of Revolution*

Hobsbawm, E. J., *The Age of Empire*

Joll, Jnmes, *Europe Since* 1870: *An International History*

Carr, E.H., *The Russian Revolution From Lenin to Stalin*, 1917-21

Sitzpatrick, Sheila, *The Russian. Revolution.*

Robert, J.M., *Penguin History of Europe.*

Mackenzie, J. R., *Imperialism and the Natural World*

Joshi, Vandana (ed.), *Social Movements and Cultural Currents 1789-1945*

Admas Ian and Dyson, R. W., *Fifty Major Political Thinkers*

Mahajan, Sneh, *Issues in Twentieth Century World History*

Leo Huberman, *Man's Worldly Goods*

P Sweezy and P Baran, I*ntroduction to Socialism*

Sharon A Kowalsky, 'Justice: Modern European Socialism, 1850-1940', in Vandana Joshi (ed.) *Revisiting Modern European History.*

See writings of Marx in www. marxist.org.